

Hindi vaachan

शिवम: सुप्रभात महोदया और प्यारे मित्रों हमारे हिंदी वाचन का शीर्षक है नेहले पे देहला जिसमें गर्व अंधा है कार्तिक कुबड़ा है और मैं शिवम कथावाचक हूँ ।

शिवम: एक बार एक अंधे और कुबड़े में दोस्ती हो गई। दोनों एक साथ ही रहते थे और साथ साथ भीख मांगने भी जाते थे। वे भीख मांगकर ही अपना पेट भरते थे। कुबड़ा रोज़ देखता था की अंधे को उससे ज्यादा पैसे मिलते हैं।

गर्व: आज भी बहुत अच्छी कमाई हो गई है अब तो सोने का समय हो गया है मैं सोने से पहले अपनी इस कमाई को एक डब्बे में डाल के सोता हूँ ताकि कोई चोरी न कर लें।

कार्तिक: हे भगवान! मेरी तो कुछ कमाई नहीं होती और इस अंधे की तो रोज़ इतनी कमाई होती है, ऐसे कैसे चलेगा।

शिवम: कुबड़े से जब रहा न गया तो 1 दिन वह अंधे के पास आकर अपना दुखड़ा रोज़ लगा कि कुबड़ा समझकर कोई उसे पैसे नहीं देता ।

कार्तिक: अंधे अगर तुम मुझे अपने साथ रख लो तो मैं तुम्हारा सारा काम कर दूंगा और रोटी भी बना दूंगा ।

गर्व: ठीक है मैं तुम्हें अपने साथ रख लेता हूँ और कुछ पैसे भी दे दिया करूँगा

शिवम: कुबड़ा सुबह जल्दी उठता और झाड़ू पोछा कर रोटी भी बना देता अंधे को पक्की पकाई रोटी मिलने लगी अब दोनों के दिन सुख से बीतने लगे लेकिन कुबड़ा तो कुछ और चाल चलना चाहता था । और उसने सही मौके का इंतजार किया .

गर्व: कुबड़े तुम्हें पता है हमारा वो रास्ता जो टीले की तरफ से होके जाता वहाँ ज्यादा कमाई होती है इसलिए आज हम वहाँ से जायेंगे तुम ऐसा करना मेरा हाथ मत छोड़ना नहीं तो मैं गिर सकता हूँ ।

शिवम: यह सुनकर कुबड़े के मन में एक तरकीब आई ।

कार्तिक: आज तो शाम हो चुकी है अब जब हम यहाँ से गुजरेंगे तो मैं उसका हाथ छोड़ दूंगा और उसे धक्का दे दूंगा ताकि वो नीचे की ओर गिर जाए।

गर्व: अरे कुबड़े तुमने मुझको धक्का क्यों दे दिया था मैं गिरता जा रहा हूँ फिसलता जा रहा हूँ मुझे फिसलन महसूस हो रही है मैं गिर जाऊंगा पहाड़ से मुझे बचाओ अरे ये क्या मैं झाड़ियों में अटक गया। कुबड़े ऐसा मत करो बचा लो मुझे ।

कार्तिक: हे भगवान मुझसे गलती हो गई मैं उसे ऊपर खींच लेता हूँ आज अंधे आज ऊपर आज

गर्व: क्यों रे कुबड़े तुने मुझे धक्का क्यों दिया ?

कार्तिक: नहीं भाई मैंने तुम्हें धक्का नहीं दिया। ये तो मेरा पांव पत्थर से टकरा गया था जिससे तुम्हारा हाथ मुझसे छूट गया और धक्का लग गया

शिवम: अंधा चुप रहा लेकिन मन ही मन वह भाप गया था कि इस आस्तीन के सांप से होशियार रहना होगा। लेकिन उधर अब कुबड़े ने सोच लिया था कि अब ऐसी चाल चलूंगा जिससे हींग लगे न फिटकरी रंग चोखा आवे ।

कार्तिक: सुन अंधे, आज मैं खाने के लिए मछली लाया हूँ। मैं इसे चूल्हे पर चढ़ाकर ज़रा काम से बाहर जा रहा हूँ, तुम इसे हिलाते रहना और जब पक जाए मेरे हिस्से का रखकर तुम खा लेना ।

शिवम: और कुबड़ा चला गया।

गर्व: चलो मैं इसे हिला लेता हूँ लेकिन ऐसे कैसे इससे तो बहुत भाप निकल रही है? मेरी आंखें जलने लग रही हैं और बहुत ही ज्यादा पानी बह रहा है . ये कुबड़ा क्या पकने के लिए रख के गया है . पहले तो मैं मुँह धो लेता हूँ अरे अरे अरे अरे मुझे तो सब दिखाई देने लग गया हे मेरी आँखें ठीक हो गई मुझे खुद पर विश्वास नहीं हो रहा |ये क्या! कुबड़ा कढ़ाई में सांप रख के गया था ये पक्का कुबड़े की चाल होगी मुझे मारने के लिए आने तो दो उसकी खबर लूँगा |ऐसा करता हूँ एक मोटा डंडा लेके दरवाजे के पीछे छुपकर खड़ा हो जाता हूँ।

कार्तिक: अब तो काफी रात हो चुकी है अंधा मर चुका होगा आज उसकी सारी जमा पूंजी मेरी हो जाएगी |

शिवम:काफी रात के बाद जब कुबड़ा खुशी खुशी घर लौटा और जैसे ही उसने दरवाजे के अंदर कदम रखा कि अंधे ने डंडे से उसे धमाधम पीटना शुरू कर दिया और पीट पीटकर उसे नीचे गिरा दिया और बोला :

गर्व: क्यों रे धोखेबाज तू मुझे मार डालने को सांप के टुकड़े कड़ाही में डालकर गया था।वो तो मेरी किस्मत अच्छी थी कि उस सांप के टुकड़ों की भाप से मेरी आंखें ठीक हो गई और मैं तेरे षड्यंत्र से बच गया।

कार्तिक: अंधे तुने मुझे गलत समझा। मैं तो सांप के टुकड़े तेरे अंधेपन का इलाज करने के लिए कढ़ाई में डाल कर गया था |

गर्व: तो मैंने भी तो तेरे कुबड़ेपन को ठीक करने के लिए तुझे डंडे से पीटा है।

शिवम: इतना सुनते ही कुबड़ा चौंक गया और झटपट उठकर खड़ा हुआ । सचमुच उसका कुबड़ा ठीक हो गया था दोनों मित्र हंसते हंसते लोटपोट हो गए और हमेशा के लिए दोनों पक्के दोस्त बन गए।
धन्यवाद।